जयप्रकाश जी की शारीरिक अवस्था ठीक नहीं थी। लेकिन अपने लक्ष्य-पूर्ति पर अडिग रहने का दुर्दम्य साहस उनमें कायम था। उन्होंने देश भर के चुनाव का नेतृत्व किया। फलस्वरूप, 1977 के आम चुनाव में इंदिरा जी का अहंकार मटियामेट हुआ और देश तानाशाही से मुक्त हुआ।

मोरारजीभाई देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी। लेकिन राजनेताओं की आँखें खुल नहीं पाई। वे पूर्ववत् व्यक्तिगत सत्ताधीश बनने के आपसी संघर्ष में जुट गए।

इन नेताओं में जसलोक अस्पताल में मृत्यु-शैया पर पड़े जयप्रकाश जी को देखने तक कोई नहीं पहुंचा। जयप्रकाश जी ने अंतिम सांस ली।

अपने देश का इतिहास बता रहा है कि देश की तरूणाई ने ही हर समय देश को महान संकटों से बचाकर उन्नति के मार्ग पर गतिशील बनाया था। 1947 में स्वतंत्रता पाने के बाद भी देश के वयोवृद्ध नेताओं ने देश को विकट संकट में ला पटका है। युवाओं को ही फिर से देश को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाना होगा।

शुभाकांक्षी -

नाना देशमुख

**( नाना देशमुख )**



प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

सन् 1977 के आम चुनाव में श्रीमती इंदिरा जी की तानाशाही से देश मुक्त हुआ। पार्टी डेमोक्रेसी पूर्ववत् चलने लगी। श्री मोरारजी भाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी। इस क्रांतिकारी परिवर्तन के प्रणेता जयप्रकाश जी के प्रति सत्ता के मजनुंओं के मन में कृतज्ञता का अपेक्षित भाव दिखाई नहीं दिया। आपातकाल का संकट झेलने के बावजूद वे सत्तासुख भोगने में ही कृतार्थता अनुभव करने लगे। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में आवश्यक परिवर्तन करने की किसी को चिंता नहीं हुई।

दीनदयाल शोध संस्थान ने 1977 की 25 सितम्बर को स्व. दीनदयाल जी की जयंती पर गोण्डा जिले में ''जयप्रभा ग्राम'' की स्थापना की।

जयप्रकाश जी के ''समग्र-क्रांति'' अभियान को आगे बढ़ाए बिना भारत का भविष्य उज्ज्वल बनाना संभव नहीं है, यह दीनदयाल शोध संस्थान की धारणा थी। दीनदयाल जी द्वारा प्रणीत ''एकात्ममानव दर्शन'' की अवधारणा एवं जे.पी. की ''समग्र-क्रांति'' की अवधारणा में विशेष अंतर नहीं था। दीनदयाल जी ने एक और पहलू उसमें जोड़ा था। वह था - अपनी गतिशील संस्कृति को यथास्थितिवादियों के चंगुल से छुड़ाकर पूर्ववत् गतिमान बनाना। अत: दीनदयाल शोध संस्थान देश के ग्रामीण अंचल में जयप्रकाश जी एवं दीनदयाल जी की अवधारणाओं को साकार करने के प्रयोगों में जुट गया।

सत्ता-प्राप्ति की आकांक्षा से प्रेरित विभिन्न पार्टियों से बनी जनता पार्टी का अस्तित्व टिकाए रखने की चिंता की अपेक्षा स्वयं सत्ता में शीर्ष पद पाने की ही प्रवृत्ति अधिक प्रबल थी।

1978 के अप्रैल माह के प्रारंभ में मैंने प्रधानमंत्री श्री मोरारजी भाई से सविनय अनुरोध किया था कि वे अब प्रधानमंत्रीत्व का दायित्व स्वयं छोड़कर अपने पसंद के किसी योग्य युवा नेता को सौंप दें। इससे उनकी कीर्ति सदा-सर्वदा बनी रहेगी।

मेरे इस प्रस्ताव से मोरारजी भाई नाराज हुए। वे प्रधानमंत्री पद से हटना नहीं चाहते थे। मैंने उनसे विनम्रतापूर्वक कहा कि जनता पार्टी की सरकार अब आपके नेतृत्व में अधिक दिन टिक नहीं पाएगी। मेरे इस कथन से वे और अधिक क्रुद्ध हुए। मेरे इस प्रस्ताव का पत्र उन्होंने फाड़कर फेंक दिया।

मेरे इस प्रस्ताव से मेरे पुराने जनसंघी साथी भी नाराज हुए। उन्होंने श्री कंवरलाल गुप्ता को मेरे पास भेजा। मैं अपना प्रस्ताव वापस लूं, इसका उन्होंने आग्रह किया।

मैंने उन्हें स्पष्ट शब्दों में कहा कि ''आप लोग बहुत बड़े नेता हैं। आपको अपने पैरों तले से खिसकती जमीन दिखाई नहीं देती। श्रीमती इंदिरा जी ने आपकी पार्टी की कमजोरी